स्नातक खण्ड - 2
हिन्दी प्रतिष्ठा
चतुर्थ पत्र

प्रश्न (2) आचार्य नलिन विलोचना शर्मा के हिन्दी उपन्यास शीर्षक निबंध का आशय लिखिए।

अथवा

आलोचना के क्षेत्र में आलोचक आचार्य नलिन-विलोचन शर्मा के योगदान की समीक्षा कीजिए।

उत्तर संस्कृत के उद्भट विद्वान रामावतार शर्मा के पुत्र नलिन जी को व्युत्पत्ति विरासत के तौर पर प्राप्त हुई थी। अपने पिता की तरह ही वे देश विदेश की विविध भाषाओं तथा बहुमुखी रचनाधर्मिता से अवगत थे।

शर्मा बहुभाषाविद, बहुपठित और अनेक ज्ञानानुशासनों में रूचि रखनेवाले आलोचक थे। संस्कृत की शास्त्रीय समीक्षा और यूरोप की पुरानी-नयी समालोचना-सारणियों से वे पूर्णत: अवगत थे।

नलिनजी भावयित्री ही नहीं, कारयित्री प्रतिभा के भी धनी थे, कवि रूप में उन्होंने विशिष्ट प्रयोग किए थे। उनकी कविताओं को प्रपद्यवाद से जोड़ा जाता है।

नलिन जी ने निराला के मुक्तछंद पर विचार करते हुए सैद्धांतिक

(1)

शर्मा के हिन्दी
आशय लिखिए।

क आचार्य नलिन-
की समीक्षा

रामावतार शर्मा
पति : विरासत
। अपने पिता
की विविध
ताधर्मिता से

, बहुपठित और
रखनेवाले आलोचक
मीक्षा और
लोचना -सारणियों

वयित्री ही नहीं,
, कवि रूप
ए थे। उनकी
जाता है।

जी ने निराला
हुए सैद्धांतिक

आलोचना को नयी दिशा प्रदान करने वाला कहा है।
नलिन जी निराला के मुक्तछंद पर विचार करते हुए सैद्धांतिक आलोचना और ऐतिहासिक आलोचना के समन्वित रूप को दर्शित किया है। उन्होंने 'मुक्तछंद और मुक्तकाव्य के पार्थक्य को रेखांकित करते हुए फ्रांसीसी प्रतीकवाद की अभिन्नता दर्शित की है। 'विहारबन्धु' में प्रकाशित महेशनारायण की एक कविता के आधार पर उन्हें हिन्दी में मुक्तछंद का प्रथम स्थापित करते हैं।

ऐतिहासिक आलोचना के क्षेत्र में नलिन जी का योगदान महत्वपूर्ण है। आलोचना के इतिहास विशेषांक में प्रकाशित 'हिन्दी उपन्यास' शीर्षक उनका निबंध इस संदर्भ में द्रष्टव्य है।

एक कथालोचक के रूप में नलिन जी की उपलब्धियाँ स्मरणीय हैं। हिन्दी उपन्यास विशेषत: प्रेमचंद में उन्होंने प्रेमचंद, जैनेन्द्र, अज्ञेय, आदि हिन्दी-लेखकों का ही मूल्यांकन नहीं किया है, बल्कि कई विदेशी कथाकारों का भी विवेचन किया है। जिससे उनकी अध्ययनशीलता और मूल्यांकन क्षमता प्रकट होती है। वे स्वयं अच्छे कहानीकार हैं।